नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

बेकाबू होती मंहगाई का असर अब रसोई पर

महंगाई का असर अब आंकड़ों से आगे बढ़कर आम आदमी की रसोई में साफ दिखाई देने लगा है. अगस्त में खुदरा महंगाई दर बढ़कर 4.82 प्रतिशत पहुंच गई, जबकि जुलाई में यह 4.45 प्रतिशत थी. नवंबर के 0.71 प्रतिशत के मुकाबले देखें तो महंगाई दर में कई गुना वृद्धि हुई है. सब्जी, किराना और रोजमर्रा की जरूरतों की वस्तुओं के बढ़ते दामों ने परिवारों का बजट बिगाड़ना शुरू कर दिया है.

सबसे चिंता की बात यह है कि महंगाई का दबाव शहरों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है. अगस्त में ग्रामीण खुदरा महंगाई 5.23 प्रतिशत रही, जबकि जुलाई में यह 4.84 प्रतिशत थी. यानी गांवों में रहने वाले परिवारों पर महंगाई की चोट ज्यादा पड़ रही है. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आमदनी के सीमित विकल्प और रोजमर्रा की वस्तुओं पर अधिक निर्भरता को देखते हुए इसका असर और गंभीर हो सकता है. रसोई के सामानों के दामों पर नजर डालें तो स्थिति की गंभीरता समझ में आती है. एक साल में प्याज के औसत दाम करीब 48 प्रतिशत बढ़ गए हैं. अगस्त 2025 में प्याज 36.20 रुपए किलो था, जो अगस्त 2026 में बढ़कर 53.65 रुपए हो गया. लहसुन 124.78 रुपए से बढ़कर 179.24 रुपए किलो और अदरक 84.31 रुपए से बढ़कर 146.52 रुपए किलो हो गया. यानी इन दोनों जरूरी मसालों की कीमतों में क्रमशः करीब 44 और 74 प्रतिशत की वृद्धि हुई है. दाल और चीनी भी परिवारों के बजट पर दबाव बढ़ा रही हैं. अरहर दाल के दाम करीब 6.5 प्रतिशत और उड़द दाल के दाम 7 प्रतिशत बढ़े हैं.

सबसे उल्लेखनीय वृद्धि चीनी में है, जिसकी औसत कीमत एक साल में करीब 29 प्रतिशत बढ़ गई. चावल भी करीब 4 प्रतिशत महंगा हुआ है. हालांकि गेहूं, आटा और खुली चाय की कीमतों में अपेक्षाकृत मामूली बदलाव हुआ है, लेकिन रसोई की कई प्रमुख वस्तुओं की तेजी ने कुल खर्च बढ़ा दिया है. महंगाई की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि यह केवल किसी एक वस्तु के दाम बढ़ने का मामला नहीं है. जब प्याज, लहसुन, अदरक, दाल और चीनी जैसी रोजमर्रा की वस्तुएं महंगी होती हैं तो इसका असर हर परिवार के मासिक बजट पर पड़ता है. निम्न और मध्यम आय वर्ग के परिवारों को अपनी दूसरी जरूरतों में कटौती करनी पड़ती है. ग्रामीण क्षेत्रों में इसका असर खपत और स्थानीय कारोबार पर भी पड़ सकता है.

सरकार के सामने अब चुनौती महंगाई को केवल आंकड़ों में नियंत्रित रखने की नहीं, बल्कि रसोई तक राहत पहुंचाने की है. सब्जियों और खाद्य वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला में बिचौलियों की भूमिका कम करना, जमाखोरी पर प्रभावी कार्रवाई और कीमतों की नियमित निगरानी जरूरी है. जरूरत पड़ने पर आयात-निर्यात नीति में समयानुकूल बदलाव भी करना होगा. अर्थव्यवस्था की रफ्तार के साथ आम आदमी की क्रय शक्ति मजबूत रहना भी उतना ही जरूरी है. महंगाई यदि लगातार बढ़ती है तो कमाई बढ़ने के बावजूद परिवारों की वास्तविक बचत घटती है. इसलिए अगस्त के बढ़े हुए महंगाई आंकड़े सरकार के लिए एक संकेत हैं कि अब रसोई के बजट को राहत देना आर्थिक नीति की प्राथमिकताओं में ऊपर आना चाहिए.

घोषणापत्र पर सहमति ऐतिहासिक सफलता

भारत की बड़ी उपलब्धि

ब्रिक्स में चीन और भारत की रणनीतिक प्रतिस्पर्धा है. रूस और पश्चिम के बीच गहरी खाई है. ईरान और उसके विरोधी देशों के अपने क्षेत्रीय समीकरण हैं. आर्थिक हित भी हमेशा समान नहीं है. इसलिए सर्वसम्मति बनाए रखना भविष्य में और कठिन होगा. भारत की अगली चुनौती होगी कि दिल्ली की सहमति को बहुपक्षवाद में बदला जाए.

दिल्ली में 18वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन शुरू होने से पहले सबसे बड़ा सवाल यही था कि नेता किसी साझा घोषणापत्र पर सहमत हो पाएंगे? इसी साल मई में दिल्ली में हुई ब्रिक्स विदेश मंत्रियों की बैठक बिना संयुक्त घोषणापत्र के समाप्त हुई थी. पश्चिम एशिया के संकट, विशेषकर ईरान और संयुक्त अरब अमीरात के बीच तीखे मतभेदों ने यह संकेत दे दिया था कि विस्तारित ब्रिक्स में सहमति-निर्माण कहीं अधिक कठिन हो चुकी है.

ऐसे वातावरण में 12 सितंबर को दिल्ली में डिक्लेरेशन पर सर्वसम्मति बन जाना भारत की मेजबानी और उसकी सक्रिय, संतुलित एवं व्यावहारिक कूटनीति की महत्वपूर्ण सफलता है. 45 पन्नों और 140 बिंदुओं वाले इस घोषणापत्र में पहलगाम में हुए आतंकी हमले के साथ-साथ टेरर फंड, फिलिस्तीन, गाजा, टैरिफ और लेबनान का जिक्र किया गया है. साथ ही मध्य-पूर्व के शांतिपूर्ण हल की अपील की गई है.

ब्रिक्स घोषणा पत्र में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप और अमेरिकी टैरिफ का नाम तो नहीं लिया गया है, लेकिन साफ तौर पर कहा गया है कि कई देशों को 'अन्यायपूर्ण और एकतरफा संरक्षणवादी कदमों' से नुकसान हो रहा है. यह इशारा डोनाल्ड ट्रंप की ओर से भारत, चीन समेत दुनिया के कई देशों पर लगाए गए टैरिफ की ओर ही था. ब्रिक्स अब पहले वाला छोटा समूह नहीं है. इसका विस्तार हुआ है और इसमें अलग-अलग राजनीतिक व्यवस्थाओं, सुरक्षा चिंताओं, आर्थिक हितों और विदेश नीति के दृष्टिकोण वाले देश शामिल हैं. अकेले घोषणापत्र जारी कर देना असाधारण उपलब्धि नहीं होती. यह असाधारण तब बनती है, जब ऐसा दस्तावेज ऐसे समूह में तैयार हो, जिसके सदस्य एक-दूसरे के रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी भी हों. भारत ने इस चुनौती को मुद्दा आधारित सहमति और आम सहमति आधारित कूटनीति के माध्यम से संभाला.

भारत एक साथ अनेक शक्ति केंद्रों के साथ संबंध बनाए रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों की स्वतंत्रता सुरक्षित रखता है. दिल्ली शिखर सम्मेलन में चीन, रूस, ईरान, यूएई और अन्य देशों की उपस्थिति के बीच संवाद का वातावरण बनना इसी का प्रमाण है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकासशील देशों को केवल वैश्विक व्यवस्था के 'नियम मानने वाले' नहीं बल्कि 'नियम बनाने वाले' बनाने की आवश्यकता पर बल दिया. यह महज भाषण का राजनीतिक मुहावरा नहीं है, यह वैश्विक शासन में प्रतिनिधित्व के मौजूदा असंतुलन को चुनौती देने वाली कूटनीतिक अवधारणा है.

भारत ने ब्रिक्स को पश्चिम-विरोधी मंच बनाने के बजाय वैश्विक दक्षिण की रणनीतिक एजेंसी के मंच के रूप में स्थापित करने की कोशिश की है. यही अंतर भारत की अध्यक्षता को चीन या रूस की संभावित दृष्टि से अलग करता है. दिल्ली की कूटनीतिक परीक्षा सबसे अधिक पश्चिम एशिया के मुद्दे पर हुई. ईरान और यूएई दोनों की मौजूदगी में ऐसा शब्द-संतुलन तैयार करना आसान नहीं था, जिसे सभी स्वीकार कर सकें. घोषणापत्र में हिंसा पर चिंता, अधिकतम संयम और संवाद तथा कूटनीति के माध्यम से विवादों के समाधान पर जोर दिया गया.

घोषणा ने ब्रिक्स की आर्थिक भूमिका को भी अधिक व्यावहारिक दिशा देने की कोशिश की है. स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और निवेश, सीमा-पार भुगतान व्यवस्था, न्यू डेवलपमेंट बैंक के माध्यम से स्थानीय मुद्रा वित्तपोषण और प्रस्तावित निवेश मंच जैसे मुद्दे इसमें शामिल हैं. हालांकि साझा ब्रिक्स मुद्रा का कोई तात्कालिक निर्णय नहीं हुआ, लेकिन स्थानीय मुद्राओं में लेन-देन और भुगतान प्रणालियों के बीच सहयोग की दिशा में आगे बढ़ना अधिक व्यावहारिक कदम है.

-लोकमित्र गौतम

दिल्ली डायरी

दरवाजे पर चुनाव, बसपा में बढ़ा पारिवारिक तनाव

प्रवेश कुमार मिश्र

उत्तर प्रदेश में चुनावी बिगुल फूंकने की तैयारियां तेज हैं, लेकिन बसपा के भीतर की सियासी सुगबुगाहट कुछ और ही कहानी बयां कर रही है. चर्चा है कि जैसे-जैसे चुनाव दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं, पार्टी के भीतर पारिवारिक तनाव और वर्चस्व की अंदरूनी लड़ाई गहरी होती जा रही है. कहा जा रहा है कि उत्तराधिकार, परिवार के सदस्यों के सांगठनिक भूमिकाओं और टिकट बंटवारे को लेकर पार्टी के भीतर जबरदस्त तनाव है. इस तनाव का मुख्य केंद्र मायावती व उनके भतीजे आकाश आनंद और उनके ससुर हैं. उत्तराधिकार की इस कतार में युवाओं को आगे बढ़ाने की कवायद और परिवार के भीतर ही प्रभाव जमाने की इस खींचतान ने पुराने वफादारों को भी असमंजस में डाल दिया है. चुनावी चौखट पर खड़े संगठन के सामने यह आंतरिक घमासान ऐसे समय पर उभरा है जब बसपा को जमीन पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए एकजुटता की जरूरत थी.

पायलट के जाते ही दुरूस्त हुआ पंजाब का कांग्रेसी कारवां

पंजाब कांग्रेस के सियासी गलियारों में इन दिनों पार्टी महासचिव सचिन पायलट की उपस्थिति और सख्ती से माहौल बदल गया है. कल तक पार्टी संगठन में तू तू मैं मैं को हवा देने वाले नेताओं की हवा खराब होने लगी है. राजनीतिक हलकों में यह चुटकी खूब ली जा रही है कि पंजाब पहुंचते ही पायलट ने बगावती सुरों और गुटबाजी को थामने के लिए गियर बदल दिया है. जिसके कारण पार्टी नेता राजा वड़िंग और चरणजीत सिंह चन्नी के गुटों के बीच चल रही अंदरूनी खींचतान को पीछे छोड़ अब एक ही मंच पर आने को मजबूर दिख रहे हैं, जिससे बिखरा हुआ कांग्रेसी कारवां कुछ हद तक दुरुस्त होता नजर आ रहा है. चुनावी रण में उतरने से ठीक पहले पंजाब में ऑल इज वेल के साथ कांग्रेस राहुल गांधी की बस यात्रा आरंभ करने और ड्रग्स संकट के खिलाफ बड़े प्रदर्शन कर पंजाब के कोने-कोने में चुनावी माहौल बनाने की कोशिश की जा रही है. चर्चा है कि पायलट के सख्त व अनुशासित अभियान से जहां एक तरफ कांग्रेस पार्टी के अंदर गुटबाजी समाप्त होने लगी है वहीं दूसरी ओर सत्ताधारी आम आदमी पार्टी कांग्रेसी एकजुटता के कारण चौतरफा घिरने लगी है.

बहुस्तरीय साक्षात्कार के बाद चुने जाएंगे कांग्रेसी सचिव

कांग्रेस में अब संगठन के भीतर एंट्री पाना इतना आसान नहीं होगा. पार्टी के भीतर सांगठनिक बदलावों और आगामी चुनावों की तैयारियों के बीच पैराशूट लैंडिंग बंद होता दिख रहा है.कांग्रेस आलाकमान अब सिर्फ सिफारिश के दम पर पद पाने की परंपरा को पूरी तरह खत्म करने के मूड में है. नए सचिवों के चयन के लिए बकायदा एक खाका तैयार किया गया है, जिसके तहत उम्मीदवारों को कई दौर के कड़े इंटरव्यू और जमीनी फीडबैक की प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ रहा है. सबसे दिलचस्प बात यह है कि राहुल गांधी खुद भी इन साक्षात्कारों के दौरान मौजूद रह रहे हैं. उम्मीदवारों की संगठनात्मक क्षमता,वैचारिक स्पष्टता तथा संकट प्रबंधन की योग्यता को व्यक्तिगत रूप से परख रहे हैं. चुनावी समर से ठीक पहले संगठन को पूरी तरह प्रोफेशनल और जवाबदेह बनाने की इस नई प्रक्रिया ने पार्टी के भीतर सिर्फ सिफारिश के भरोसे बैठे नेताओं की धड़कनें बढ़ा दी है.

बिहार में फिर बिखरा विपक्षी कुनबा

बिहार की सियासत में गठबंधन बनने और बिगड़ने का सिलसिला कोई नया नहीं है लेकिन विधानसभा चुनाव में मिले पराजय के बाद एकजुट रहने की बात करने वाले महागठबंधन के साथी विधानपरिषद चुनाव के ठीक पहले अपनी डफली अपना राग अलापना शुरू कर रहे हैं.

टीएमसी से अलग हुए सांसद बगलें झांकने पर मजबूर

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद टीएमसी से नाता तोड़कर एक छोटे राजनीतिक दल एनसीपीआई का दामन थामने वाले 20 बागी सांसदों की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही है. राजनीतिक गलियारों में इस बात की चर्चा बेहद गर्म है कि खुद को सुरक्षित मान रहे ये सांसद अब राज्य के आगामी स्थानीय निकाय और कोलकाता नगर निगम चुनावों की आहट के बीच बगलें झांकने पर मजबूर हो गए हैं. चर्चा है कि इन बागियों को सबसे बड़ा झटका भाजपा द्वारा स्थानीय निकाय चुनाव में उनके क्षेत्र विशेष में भी खास तवज्जो नहीं देने से लगा है. क्योंकि भाजपा का प्रदेश नेतृत्व अपने कैडर को तरजीह दे रहा है और इन दलबदलुओं को स्थानीय स्तर पर महत्व देने के मूड में बिल्कुल नहीं है. हालांकि दिल्ली की राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि उपेक्षा को देखते हुए बीस में से सत्रह सांसद अब एनसीपीआई को छोड़ भाजपा में शामिल होने की तैयारी में हैं.

शाह, राजनाथ, निर्मला के पास कार नहीं

केंद्रीय मंत्रियों ने हाल ही में अपनी धन-संपत्ति का विवरण दिया है. खास बात यह है कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन के पास उनके नाम से एक कार तक नहीं है. एचडी कुमारस्वामी, जीतनराम मांझी और जयंत चौधरी के पास गाएं पली हुई हैं. कुमार स्वामी कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री रहे हैं. उनके यहां 34 गाय और 273 भेड़ें हैं. मांझी के पास 4 गाय और 3 बछड़े हैं. जयंत चौधरी ऐसे एकमात्र केंद्रीय मंत्री हैं जिनके पास क्रिप्टो करेंसी है. 30 केंद्रीय मंत्रियों व 5 राज्यमंत्रियों ने अपनी चल-अचल संपत्ति की जानकारी दी है. नितिन गड़करी, एस. जयशंकर, पीयूष गोयल, ललन सिंह, गजेंद्र सिंह शेखावत के पास कार है, लेकिन जी किशन रेड्डी के पास 1995 की 31 वर्ष पुरानी मारुति 800 कार है, जिसकी कीमत 11 लाख रुपये है. निर्मला सीतारमन के पास बजाज चेतक स्कूटर है. दिल्ली व आसपास जिन मंत्रियों की जमीन पर आवास है, उनमें जयशंकर, ललन सिंह, जुएल ओराम, हरदीप सिंह पुरी, जयंत चौधरी, अश्विनी वैष्णव, गिरीराज सिंह, किरेन रिजिजू, जीतेंद्र सिंह, राव इंदरजीत सिंह का समावेश है. कुछ मंत्रियों के पास कृषि-भूमि भी है. जयंत चौधरी, हरदीप सिंह पुरी की विदेश में संपत्ति है. ज्योतिरादित्य सिंधिया व उनकी पत्नी की यूके, अमेरिका, यूरोप, जापान में संपत्ति है. मंत्री वीरेंद्र कुमार, अन्नपूर्णा देवी, ललन सिंह व गजेंद्र सिंह शेखावत के पास बंदूक, पिस्तौल आदि शस्त्र हैं. अधिकांश मंत्रियों ने 2024 के लोकसभा चुनाव के समय अपने व परिवार के संसाधन घोषित कर दिए थे. अब उन्होंने 31 अगस्त तक अपनी संपत्ति का ऐलान किया है. प्रधानमंत्री कार्यालय केंद्रीय मंत्रियों की संपत्ति का विवरण ऑनलाइन जारी करता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

बेमतलब की अकड़ और गुस्सा, ऐसा होता है 'नाराज फूफा'

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले दिनों विपक्ष को 'नाराज फूफा' कहा. इसका मतलब क्या होता है? हमें समझाइए कि फूफा कौन होता है और नाराज किसलिए होता है? क्या वह खुश या प्रसन्न नहीं रह सकता?'

हमने कहा, 'फूफा का मतलब होता है पिता का जीजा या उनकी बहन का पति. हिंदी भाषी प्रदेशों में दामाद का बहुत मान-पान होता है. इस वजह से वह ससुराल में जरा-सी कसर रह जाने पर मुंह फुला लेता है. वह चाहता है कि उसे वीआईपी मानकर सब उसकी खुशामद करें. ससुराल में सालेसाहब के बच्चे उसे फूफा जी कहते हैं. फूफा अर्थात बुआ का पति! वह सोचता है कि ससुराल में भी उसका पावर चलेगा और वहां के महत्वपूर्ण फैसले उसकी राय से लिए जाएंगे. अकड़ना, रूठ जाना और बात-बात में गुस्सा हो जाना उसका स्वभाव होता है. उसे टाइम पर चाय, नाश्ता, मनपसंद पकवान, आराम करने के लिए उचित व्यवस्था चाहिए. वह चाहता है कि लोग उसके सामने हाथ बांधे खड़े रहें.' पड़ोसी ने कहा, 'उस नखरेबाज फूफा का अवमूल्यन कब होता है? उसकी अक्ल कब ठिकाने आती है?'

हमने कहा, 'समय के साथ फूफा पुराना और बुजुर्ग हो जाता है. ससुराल में नए दामादों की खातिरदारी होने लगती है. सालेसाहब की बेटे-बेटियों की शादी होती है, उस समय बारात के दौरान जब फूफा को भाव नहीं दिया जाता या उनकी उपेक्षा होती है तो वह नाराज हो जाते हैं. वह कितना भी नाराज हो जाएं या रूठें उनको कोई नहीं मनाता. वह अपने घर वापस जाने की धमकी देते हैं तो भी कोई नहीं सुनता. नया दामाद डॉलर बन जाता है और घर का पुराना दामाद अर्थात फूफा की हालत रुपये जैसी कमजोर हो जाती है. वह नाराज फूफा बनकर अपना रुद्रावतार दिखाने की कोशिश करता है. सारे आयोजन से खुद को दूर कर लेता है लेकिन किसी को फुरसत नहीं कि उससे पूछे कि फूफा आप खफा क्यों हैं? आखिर नाराज फूफा की सारी अकड़ निकल जाती है.'

शब्द-सागर 12381

- डॉ. सागर खादीवाला

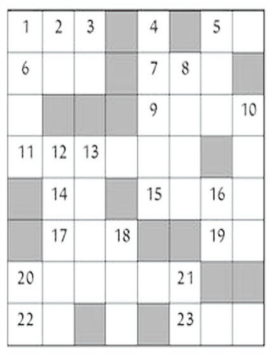

बाएं से दाएं
1. झलक, मिथ्या ज्ञान, प्रतीति, संकेत (सं.) 5. लकड़ी का कम चौड़ा और लंबा पल्ला, कागज का ताव 6. पाला, हवा में मिली भाप जो जमकर पृथ्वी पर गिरती है 7. मिला हुआ, प्राप्त, जोड़ में किसी संख्या का वह अंश जो अंतिम अंक के नीचे लिखे जाने से बचा रहे 9. वह इमारत जिसमें किसी राजा की कब्र हो 11. भारतीय दंड विधान 14. एक शब्द जिसके द्वारा वक्ता तथा श्रोता के अतिरिक्त तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है 15. पद, ओहदा, बार, दफा 17. पत्थर आदि का वह रंगीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिए आभूषण, अंगूठी आदि में जड़ा जाता है 19. दाना, बहुत छोटा टुकड़ा 20. ऊंचे दिल वाला (सं.) 22. एक पौधा जिसके रेशे से रस्सियां आदि बनाई जाती है 23. स्थापित करना, गीली वस्तु को हाथ या सांचे में पीटकर बनाना

ऊपर से नीचे
1. उतावली, अधीरता, बेचैनी, व्यग्रता (सं.) 2. बोलकर भावप्रकाश करने का साधन, बोली, जबान (सं.) 3. प्याला (उर्दू) 4. जिसकी महिमा अत्यधिक हो, राज्यपाल आदि के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द 5. इच्छा, चाह, बुलावा 8. एक प्रख्यात विजेता जो मकदुनिया नरेश का पुत्र था 10. अचूक, तुरंत लाभकारी 12. प्राणदान, मरने से बचाना 13. पथिक, मुसाफर 16. पर्यंत 18. नृत्य करना 20. 'वह' का विभक्ति लगने का पूर्व रूप 21. और, ऐसे ही

Solution 12380

चो	टी	■	अ	धी	र	■	ब
ब	ला	■	जा	■	ज	टि	ल
दा	■	म	न	मा	नी	■	वा
र	स	द	■	लि	■	शा	न
■	म	द	हो	श	■	मि	■
रा	का	■	शि	■	नी	ल	खा
व	ली	■	या	च	क	■	लि
त	न	वी	र	■	र	ई	श

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में बैचारिक अशांति रहेगी. सत्संग में मन लगेगा. आत्म विश्वास और शांति संतोष का अनुभव होगा. व्यवसायिक तनाव रहेगा. पारिवारिक विवाद से मन में चिन्ता रहेगी. वर्ष के मध्य में राजनैतिक मित्र के सहयोग से पद प्रतिष्ठा में परिवर्तन होगा. नवीन योजनाओं का विकास होगा. वर्ष के अन्त में व्यवसायिक तनाव कम होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों की नई योजनाओं में विचार विमर्श होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा. नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों के लिये समय अनुकूल रहेगा. मिथुन और कन्याराशि के व्यक्तियों के लिये विवादों से मुक्ति मिलेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यवसायिक तनाव कम होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों के मनोवांछित कार्य बनने का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नई योजना पर विचार विमर्श होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से अच्छा मधुर एवं स्वविवेकी होगा, हष्ट पुष्ट एवं व्यक्तित्ववान होगा, शरीर कोमल होगा, यह अपनी मनमर्जी का मालिक होगा, बुद्धिमानी से काम करेगा, मित्रों की संख्या सीमित रहेगी, प्रवास का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

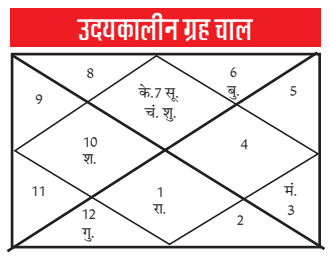

पंचांग

रा.मि. 25 संवत् 2083 भाद्रपद शुक्ल पंचमीं बुधवासरे दिन 8/56, विशाखा नक्षत्रे शाम 6/28, वैधृति योगे दिन 2/37, बालव करणे सू.उ. 5/54, सू.अ. 6/6, चन्द्रचार तुला दिन 12/1 से वृश्चिक, शु.रा. 8, 10, 11, 2, 3, 6 अ.रा. 9, 12, 1, 4, 5, 7 शुभांक- 0, 3, 7.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल पंचमीं को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से रूई, सूत, कपास, सूत, सन, जूट, पाट, बारदाना, आदि के भाव में घटबढ़ रहेगी, सोना, चांदी, के भाव में उतार चढ़ाव आयेगा, भाग्यांक 2508 है.

मेष- मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी, दूर दराज की यात्रा होगी, आर्थिक कार्यों में सावधानी रखें.

वृषभ- घर में किसी अतिथि आमन होने से व्यस्तता रहेगी, अचानक किसी अनसोचे कार्यों में सम्मिलित होना पड़ेगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

मिथुन- भावनाओं पर काबू रखें, नौकरी एवं राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा, सोचे हुये कार्यों में संदेह रह सकता है.

कर्क- एक से अधिक कार्य शुरू करने का मन बनेगा, धार्मिक कार्यों में खर्च होगा, विवादास्पद मामलों को सुलझायें, पदोन्नति का योग है.

सिंह- मेहमानों की आवाजाही रहने से व्यस्त रहेंगे, व्यापार में सावधानी रखें, कोई नवीन सुखद समाचार मिलेगा, निजी पुरुषार्थ से लाभ होगा.

कन्या- बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, व्यवसाय में सफलता मिलेगी, पारिवारिक जिम्मेदारी आ सकती है, विवादास्पद कार्यों से दूर रहना हितकर रहेगा.

तुला- सकारात्मक सोच लाभकारी रहेगी, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, शत्रु वर्ग सक्रिय रहेगा, सूझबूझ से काम बनेगा.

वृश्चिक- जीवनसाथी की भावनाओं का सम्मान करें, परिवार में मतभेद हो सकता है, मानसिक संतुलन बनाये रखें, कामकाज के प्रति निष्ठा रहेगी.

धनु- आप जिसे घाटे का सौदा समझते हैं, उसमें लाभ होगा, वाहन चलाते समय सावधानी रखें, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, कामकाज के प्रति सतर्क रहें.

मकर- अधिकारियों की अनदेखी से नुकसान होगा, साहस पराक्रम में वृद्धि होगी, अतिथि आगमन होगा, संयम से कार्य करें.

कुम्भ- कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी, सुख साधनों में वृद्धि होगी, अतिथि आगमन होगा, कोई मांगलिक कार्यों की योजना बनेगी.

मीन- अपनी गलती मानने की बजाय दूसरों को दोष देंगे, जिससे संबंध बिगड़ सकते हैं, अधिकारियों के आदेश की अवहेलना न करें.

SUDOKU 7513

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

• प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. • पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. • पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7512

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1